अन्ना के लिए नया कोट

अन्ना के लिए
नया कोट

सर्दी आ रही थी और अन्ना को एक नए कोट की सख्त जरूरत थी. कई साल सर्दियों में उसने अपना नीला कोट पहना था. पर अब वो पुराना और बहुत छोटा हो गया था. पिछले साल सर्दियों में अन्ना की माँ ने कहा, "जब युद्ध समाप्त होगा, तभी हम फिर से चीजें खरीद पाएंगे. तब मैं तुम्हें एक अच्छा नया कोट खरीद कर दूंगी."

लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद भी दुकानें खाली पड़ी थीं. वहां कोई कोट नहीं थे. खाने का सामान भी बहुत कम था. और लोगों के पास खरीदने के लिए पैसे भी नहीं थे.

अन्ना की माँ ने सोचा कि वो अन्ना के लिए एक नया कोट कैसे खरीदें. तब उन्हें एक विचार आया. "अन्ना, मेरे पास पैसे तो नहीं हैं," उन्होंने कहा, "लेकिन मेरे पास अभी भी दादाजी की सोने की घड़ी और कुछ अन्य अच्छी चीजें बचीं हैं. नए कोट के लिए हम उनका इस्तेमाल कर सकते हैं. पहले हमें ऊन की जरूरत होगी. कल हम एक किसान से मिलने जायेंगे और उससे ऊन के बारे में पूछेंगे."

अगले दिन अन्ना और उसकी माँ पास के एक खेत में किसान से मिलने गए.
"अन्ना को एक नया कोट चाहिए," अन्ना की माँ ने किसान से कहा.
"मेरे पास पैसे नहीं हैं, लेकिन अगर तुम मुझे अपनी भेड़ों का ऊन दोगे तो मैं बदले में तुम्हें यह बढ़िया सोने की घड़ी दूंगी."
किसान ने कहा, "मुझे यह मंज़ूर है! लेकिन मेरी भेड़ों के ऊन के लिए आपको वसंत तक इंतजार करना होगा. तब मैं सोने की घड़ी के बदले में आपको कोट के लिए ऊन दूंगा."

अन्ना वसंत के आने की प्रतीक्षा करती रही. लगभग हर रविवार को वो अपनी माँ के साथ भेड़ों से मिलने जाती थी. वह हमेशा उनसे पूछती, "क्या आपका ऊन बढ़ रहा है?" भेड़ हमेशा जवाब में "बा! बा!" करती थीं. फिर अन्ना और उसकी माँ भेड़ों को अच्छी ताज़ी घास खिलाती और उन्हें गले लगातीं थीं.

क्रिसमस के समय अन्ना उनके लिए कागज की माला और सेब लाई. उसने उनके लिए क्रिसमस के गीत गाए.

जब वसंत आया तो किसान ने भेड़ों की ऊन काटी.

"क्या ऊन काटने से भेड़ों को दर्द होगा?" अन्ना ने पूछा.

"नहीं, अन्ना," किसान ने जवाब दिया. "ऊन काटना, बाल काटने जैसा है."

अब उनके पास एक कोट बनाने के लिए पर्याप्त ऊन था. फिर किसान ने अन्ना को ऊन को साफ़ करना सिखाया. "ऊन को साफ़ करना बालों की गांठों को खोलना जैसा है," उसने अन्ना को बताया. फिर किसान ने अन्ना की माँ को ऊन का एक बड़ा थैला दिया और अन्ना की माँ ने उसे सोने की घड़ी दी.

अन्ना और उसकी माँ ऊन का थैला एक बूढ़ी औरत के पास ले गईं. बूढ़ी औरत के पास चरखा था.

"अन्ना को एक नए कोट की ज़रुरत है," अन्ना की मां ने महिला से कहा. "मेरे पास पैसे तो नहीं है, लेकिन मैं आपको ऊन से धागा बनाने के लिए यह सुंदर दीपक दे सकती हूँ."

महिला ने कहा, "मुझे एक दीपक की सख्त जरूरत है. लेकिन मैं जल्दी से चरखा घुमा नहीं सकती, क्योंकि मैं बूढ़ी हूं और मेरी उंगलियां अब कड़क हो गई हैं. जब चेरी पकने लगें तब तुम वापिस आना और मुझसे ऊन का धागा लेकर जाना."

जब गर्मी आई तो अन्ना और उसकी माँ वापस आ गए. अन्ना की माँ ने बुढ़िया को दीपक दिया और बूढ़ी औरत ने उन्हें ऊन का धागा और स्वादिष्ट लाल चेरी की एक टोकरी दी.

"अन्ना, तुम किस रंग का कोट पसंद करोगी?" अन्ना की माँ ने पूछा.

"लाल रंग का!" अन्ना ने जवाब दिया.

"तब हम कुछ लाल बेर लेंगे," अन्ना की माँ ने कहा. "वे एक सुंदर लाल डाई बनाते हैं."

गर्मियों के अंत में, अन्ना की माँ जंगल में सबसे अच्छे स्थान पर गईं, वहां उन्हें सबसे बड़े और लाल बेर इकट्ठे किए.
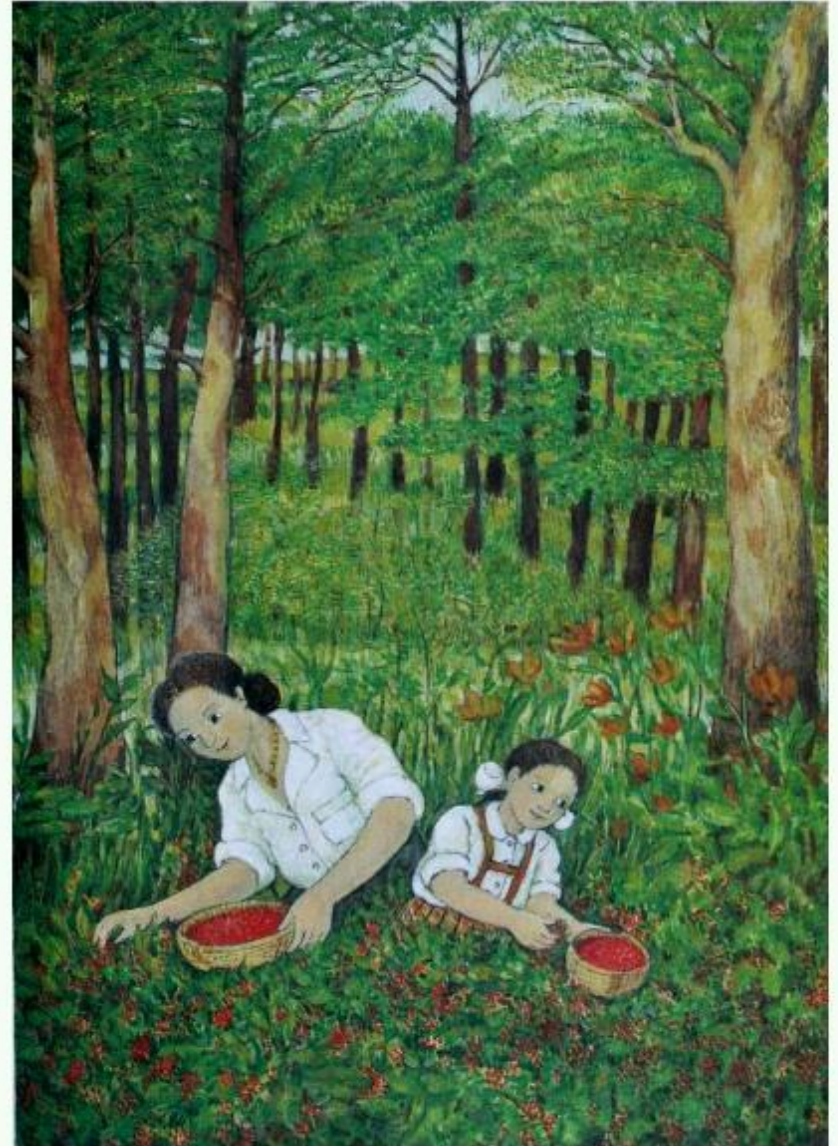
अन्ना और उसकी माँ ने एक बड़े बर्तन में पानी उबाला और उसमें लाल बेर डाले. उस रंगीन पानी में अन्ना की माँ ने ऊन का धागा डुबोया.

जल्द ही ऊन का धागा रसोई के चारों ओर कपड़ों की डोरी पर सूखने के लिए लटका हुआ था.

जब वो सूख गया, तब अन्ना और उसकी माँ ने ऊन का धागे की गेंदें बनायीं.

फिर वे ऊन के गोलों को बुनकर के पास ले गए.

"अन्ना को एक नया कोट चाहिए," अन्ना की माँ ने कहा. "मेरे पास पैसे नहीं है, लेकिन अगर आप इस धागे को कपड़े में बुनेंगी तो मैं आपको यह हरा गार्नेट का बना हार दूँगी."

बुनकर ने कहा, "यह तो बहुत सुंदर हार है. मैं आपके ऊन का धागे को ज़रूर कपड़े में बुनूँगी. आप दो सप्ताह में वापस आएं."

जब अन्ना और उसकी माँ वापस आए, तो बुनकर ने उन्हें सुंदर लाल ऊनी कपड़े का एक थान दिया. अन्ना की मां ने बुनकर को शानदार गार्नेट का हार दिया.

अगले दिन अन्ना और उसकी माँ दर्जी के पास गईं.

"अब सर्दी आ रही है और अन्ना को एक नया कोट चाहिए," अन्ना की माँ ने दर्जी से कहा. "मेरे पास पैसे तो नहीं है, लेकिन अगर तुम इस कपड़े से अन्ना के लिए एक कोट बनाओगे तो मैं तुम्हें यह चीनी मिट्टी की बनी केतली दूँगी."

दर्जी ने कहा, "यह एक सुंदर केतली है. अन्ना का एक नया कोट बनाने में मुझे बहुत खुशी होगी, लेकिन पहले मुझे अन्ना का माप लेना होगा."

उसने अन्ना के कंधे मापे. उसने अन्ना की बाहें नापीं. उसने उसने गर्दन के पीछे से उसके घुटनों तक मापा. फिर उसने कहा, "आप अगले हफ्ते वापस आना. तब तक मैं कोट सिल दूंगा."

दर्जी ने पैटर्न बनाने, कपड़ा काटने, पिन करने और सिलाई का काम किया. उसके लगभग पूरे एक हफ्ते तक कोट पर काम किया. कोट सिलने के बाद उसने अपने बटन बॉक्स में से छह सुंदर मैचिंग बटन निकाले और उन्हें भी कोट पर सिला.

फिर दर्ज़ी ने सभी के देखने के लिए खिड़की के बाहर कोट को लटका दिया.

जब अन्ना और उसकी माँ दर्जी की दुकान पर वापस आए, तो अन्ना ने अपने नए कोट को पहना. वो आईने के सामने घूमती रही.

कोट एकदम फिट था!

अन्ना ने दर्जी को धन्यवाद दिया. अन्ना की मां ने भी दर्ज़ी को धन्यवाद दिया, और उसे सुंदर चीनी मिट्टी की बनी केतली दी.

अन्ना ने अपना नया कोट घर में पहना.

वह खिड़की के काँचों में अपना प्रतिबिंब देखने के लिए हर दुकान पर रुकी.

जब वे घर पहुंचे तो उसकी माँ ने कहा. "क्रिसमस जल्द ही आने वाला है,

और मुझे लगता है कि इस साल हम एक पार्टी दे सकते हैं."

अन्ना ने कहा. "ठीक, हाँ और क्या हम उन सभी लोगों को आमंत्रित कर सकते हैं

जिन्होंने कोट बनाने में हमारी मदद की है?"

"हाँ," अन्ना की माँ ने कहा. "और मैं उसी हिसाब से क्रिसमस का केक बनाऊंगी."

अन्ना ने अपनी मां को गले लगा लिया.

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर किसान, स्पिनर, बुनकर और दर्जी अन्ना के घर आए. वे सभी सोच रहे थे कि अन्ना अपने नए कोट में कितनी सुंदर लग रही होगी.

अन्ना की मां ने बहुत ही स्वादिष्ट क्रिसमस केक बनाया. हर कोई इस बात से सहमत था कि लम्बे अर्से बाद उन्होंने इतना अच्छा क्रिसमस मनाया था.

क्रिसमस के दिन अन्ना, भेड़ों से भी मिलने गई.

"भेड़ों, ऊन के लिए आपका धन्यवाद," उसने कहा. "क्या आपको मेरा नया कोट पसंद आया?" भेड़ों ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "बा! बा!"

समाप्त